test

01 January 1990, Monday
01:00:00 AM(5.5)
New Delhi, India

रेखांश	: 77.12E
अक्षांश	: 28.36N
साम्पातिक काल	: 7:19:34
स्थानीय मानक समय	: 00:38:48
अयनांश	: 23.72 एन सी लाहिरी

लग्न	: कन्या
लग्नपति	: बुध
राशी	: कुम्भ
राशी स्वामी	: शनि
नक्षत्र	: धनिष्ठा
नक्षत्र स्वामी	: मंगल
चरण	: 2
नाड़ी	: मध्य
नाड़ी पद	: आदि
तिथि	: चतुर्थी शुक्ल
पाया	: स्वर्ण
सूर्य सिद्धांत योग	: वज्र
करण	: विष्टि
वर्ण	:
वर्ण	:
वश्य	: जलचर
योनि	: सिंह(स्त्री.)
विहग	: वायस
गण	: राक्षस
प्रथम अक्षर	: ग, गी, गू, गे
सूर्य राशि	: धनु

लग्न कुन्डली

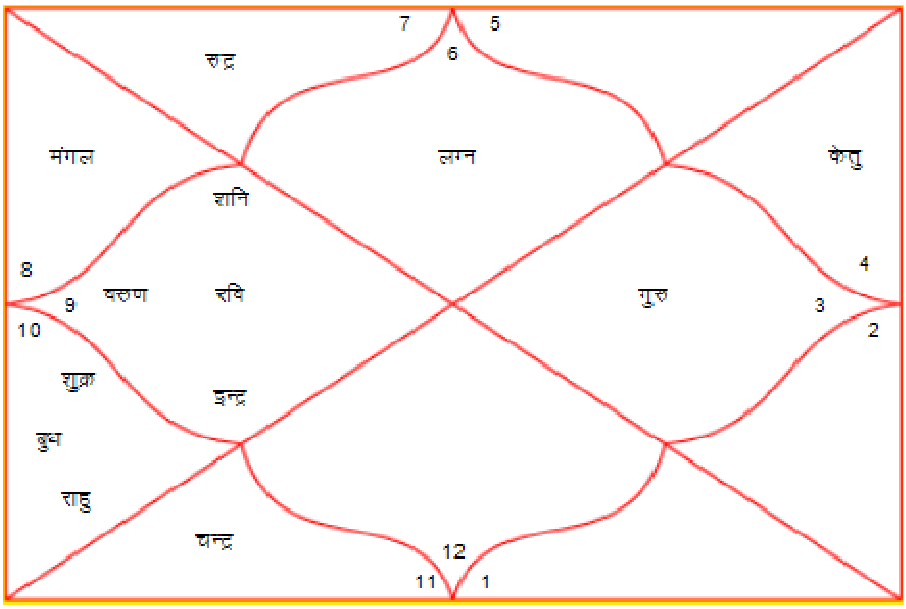

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	दिशा	राशी	स्वामी	डिग्री	नक्षत्र–पद	स्वामी
लग्न		कन्या	बुध	23:46:34	चित्रा–1	मंगल
रवि	मार्गी	धनु	गुरु	16:23:45	पूर्वाषाढ़ा–1	शुक्र
बुध	वक्री	मकर	शनि	2:6:43	उत्तराषाढ़–2	रवि
शुक्र	वक्री	मकर	शनि	12:35:5	श्रवण–1	चन्द्र
मंगल	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	15:47:57	अनुराधा–4	शनि
गुरु	वक्री	मिथुन	बुध	11:31:28	अरिद्रा–2	राहु
शनि	मार्गी	धनु	गुरु	21:51:34	पूर्वाषाढ़ा–3	शुक्र
चन्द्र	मार्गी	कुम्भ	शनि	0:19:41	धनिष्ठा–3	मंगल
राहु	वक्री	मकर	शनि	24:45:17	धनिष्ठा–1	मंगल
केतु	वक्री	कर्क	चन्द्र	24:45:17	आश्लेषा–3	बुध
इन्द्र	मार्गी	धनु	गुरु	12:1:38	मूला–4	केतु
वरुण	मार्गी	धनु	गुरु	18:17:43	पूर्वाषाढ़ा–2	शुक्र
रुद्र	मार्गी	तुला	शुक्र	23:21:27	विशाखा–2	गुरु

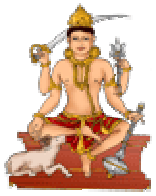

योग और आपका जीवन

आपकी कुण्डली में बहुत से योग शुभ होंगे और बहुत से अशुभ योग भी हर कुण्डली में मिलते हैं. किसी भी योग का प्रभाव तभी देखने में आता है जब योगों से जुड़े ग्रहों का बल क्षीण न हो. साथ ही योग आपके जीवन में उस दौरान फलीभूत होंगे जब उनसे जुड़ी दशा या गोचर चल रहा हो. साथ ही अशुभ और शुभ योग एक दूसरे के प्रभाव पर भी असर डालते हैं. अगर कुण्डली में शुभ योग ज्यादा हैं तो अशुभ योगों का प्रभाव कम होता है.

आपकी जन्मकुण्डली में बनने वाले योग

जन्मकुण्डली में बनने वाले योगों को ज्योतिष में बहुत महत्व दिया गया है. ज्योतिष ग्रंथों का कहना है कि इन योगों के द्वारा हम जान सकते हैं कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में क्या घटित होगा और उसे किस तरह के फलों की अपेक्षा करनी चाहिये.

योगों को जानना इसलिये भी जरूरी है क्योंकि इनके फल एक सटीक और साफ–साफ बताये गये हैं. अपनी कुण्डली के योगों से आप जान सकते हैं कि जीवन के विभिन्न हिस्सों में आप किन–किन तरह के फलों की अपेक्षा कर सकते हैं.

दामिनी योग

यदि सातों ग्रह केवल कुण्डली के छह भावों में स्थित हो स्थित हों तब दामिनी योग बनता है.

आपकी कुण्डली में दामिनी योग बनता है. इस योग के प्रभाव स्वरुप आपके जीवन में सदैव आनंद की अनुभूति रहेगी. आप पुत्रवान होंगे तथा दांपत्य जीवन का सुख प्राप्त करेंगे. माता–पिता का साथ प्राप्त होगा. आप धीर–गंभीर व्यक्तित्व के हो सकते हैं. आप विद्वान होते हैं. आपके उपर यदि कोई संकट आता है तो आप शांत रहकर उस समस्या से पार पा लेते हैं. आप साफ दिल के व्यक्ति होते हैं. आप समाज कल्याण को महत्व देते हैं आप उदार हृदय वाले हैं. आप बुद्धिमानी द्वारा समस्याओं का हल निकालने का प्रयास करते हैं. जीवन को सकारात्मक नज़रिय से देखते हैं.

दामिनी योग

यदि सातों ग्रह केवल कुण्डली के छह भावों में स्थित हो स्थित हों तब दामिनी योग बनता है.

आपकी कुण्डली में दामिनी योग बनता है. इस योग के प्रभाव स्वरुप आपके जीवन में सदैव आनंद की अनुभूति रहेगी. आप पुत्रवान होंगे तथा दांपत्य जीवन का सुख प्राप्त करेंगे. माता–पिता का साथ प्राप्त होगा. आप धीर–गंभीर व्यक्तित्व के हो सकते हैं. आप विद्वान होते हैं. आपके उपर यदि कोई संकट आता है तो आप शांत रहकर उस समस्या से पार पा लेते हैं. आप साफ दिल के व्यक्ति होते हैं. आप समाज कल्याण को महत्व देते हैं आप उदार हृदय वाले हैं. आप बुद्धिमानी द्वारा समस्याओं का हल निकालने का प्रयास करते हैं. जीवन को सकारात्मक नज़रिय से देखते हैं.

दीर्घायु योग

कुण्डली में यदि लग्नेश, त्रिकोण के स्वामी से युक्त हो तब दीर्घायु योग बनता है.

आपकी कुण्डली में दीर्घायु योग का निर्माण होता है. योग के नाम अनुसार ही आपको फल की प्राप्ति होगी. आप लंबी उम्र प्राप्त करेंगे. आपका जीवन अनेक स्थितियों का गवाह होगा. आप जीवन के हर उतार–चढ़ाव के साथ स्वयं को पाएंगे. आपके द्वारा किए गए शुभ कर्म आपको शुभता प्रदान करने वाले होंगे. आप पूर्ण जीवन भोगते हैं. आप मेहनत व बुद्धिमानी द्वारा अपने कार्यों को करने का प्रयास करेंगे. पारिवारिक सुख एवं भाई बहनों के स्नेह को प्राप्त करेंगे. कभी–कभी परिस्थितियां विषम भी हो सकती हैं पर आप यदि शांत भाव से उनका सामना करते हैं तो आप अवश्य ही उनसे उभर पाएंगे.

कर्ण योग

तृतीय भाव में मंगल से युक्त गुलिक हो तो जातक को कर्ण रोग योग होता है अथवा,

कर्ण योग

तृतीय भाव में मंगल से युक्त गुलिक हो तो जातक को कर्ण रोग योग होता है अथवा,

तृतीय भाव पाप ग्रहों से युत या पाप ग्रहों से दृष्ट हो तब कर्ण रोग के योग बनते हैं.
अथवा
यदि तृतीय भाव का स्वामी क्रूर षष्ठयांश में हो तब भी कर्ण रोग का योग बनता है.

कर्ण योग कानों से संबंधित तकलीफें दे सकता है. कान के रोग परेशान कर सकते हैं. कर्ण रोग के होने से कानों में दर्द रहता है. कई बार श्रवण शक्ति पूर्ण रुप से समाप्त हो जाती है या कम सुनने की बिमारी हो सकती है. कर्ण योग के प्रभाव से बचने के लिए आप अपनी साफ सफाई पर पूरा ध्यान दें और कानों की सफाई कराते रहें. कान के प्रभावित होने से आपको मानसिक रुप से परेशानी झेलनी पड़ सकती है. आपके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव भी पड़ सकता है. अन्य लोगों के विचारों को समझने में मुशकिल हो सकती है.

कलत्रमूलधन योग

यदि कुण्डली में बलवान धनेश की सप्तमेश से युति है अथवा धनेश की शुक्र से युति या दृष्टि संबंध हो, लग्नेश बली हो। इस योग में व्यक्ति अपनी पत्नी के माध्यम से धनवान होता है.

उत्तमग्रह योग

यदि कुण्डली में चतुर्थेश किसी शुभ ग्रह के साथ युति करके केन्द्र–त्रिकोण में हो तो यह योग बनता है
.

आपकी कुण्डली में उत्तम गृह योग बनता है. इस योग में जन्म लेने पर आप अपने स्वयं की मेहनत से बनाए हुए उत्तम घर में रहेंगे. आपके घर में सभी प्रकार की सुख–सुविधाएं रहेगी. आपको अपनी मेहनत से अनेक सुख प्राप्त होते हैं. आप अपने घर को अनेक प्रकार से सुंदर बनाने का प्रयास करते हैं. आप विशाल भू–संपदा को प्राप्त करते हैं. आप अपनी संपदा से युक्त होकर सुख को भोगते हैं. आपका समाज में रुतबा बढ़ता है. आपके मान सम्मान में वृद्धि होती है. लोगों के मध्य आप प्रधान स्थान पाते हैं . आपको अपने उत्तम गृह द्वारा सम्मान की प्राप्ति होती है.

वाशि योग

सूर्य से द्वादश भाव में राहु,केतु व चन्द्र को छोड़कर यदि अन्य ग्रह स्थित है तब वाशि या वोशि योग बनता है। इस योग में जन्म लेने से आप स्थिर वाक्य बोलने वाले व्यक्ति है। आप कठोर व परिश्रमी व्यक्ति हैं। आप उदार हृदय वाले व्यक्ति है। आप कार्य–कुशल, दानी, बुद्धिमान, सद्‌गुणी हैं। आपकी स्मरण शक्ति अच्छी है। आप उच्च अधिकारियों के प्रिय होते हैं

शंख योग

पंचम भाव के स्वामी और छठे भाव के स्वामी परस्पर केन्द्रों में स्थित हों तथा लग्नेश बलवान हो तो शंखयोग का निर्माण होता है.

आपकी कुण्डली में इस योग का निर्माण होता है. जन्म कुण्डली में इस योग के बनने के कारण आप आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं. आपका व्यवहार दूसरों के प्रति मधुर व सौम्य होता है. आप पारिवारिक दृष्टि से एक सफल व्यक्ति होते हैं. आप विद्वान एवं धर्म शास्त्र में रूचि रखने वाले होते हैं. आप दीर्घायु प्राप्त करते हैं.

परिजात योग

कुण्डली के जिस भाव में लग्नेश स्थित हो वहीं नवांश का अधिपति अथवा राशि का अधिपति स्थित हो, जिसमें लग्नेश स्थित हो उस राशि का अधिपति यदि केन्द्र, त्रिकोण या अपनी राशि व अपनी उच्च राशि का हो तो पारिजात योग का निर्माण होता है.

आपकी कुण्डली में परिजात योग का निर्माण होता है. कुण्डली में इस योग के बनने के कारण समाज में उच्च स्थान पाएंगे. आपको सरकार से पद प्राप्ति होगी. आप आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक होंगे. आप बलशाली व साहसी होंगे, आपकी रुचि मार्शल आर्ट जैसी कलाओं को सिखने में अधिक होगी. आप अपने क्षेत्र में सफलता पाएंगे. आप युद्ध के शौकिन होंगे. आपको वाहन सुख प्राप्त होगा. आप अपनी परंपराओं का पालन करने वाले होंगे. आप उदार हृदय के व्यक्ति होंगे. लोग आपको पसंद करेंगे. आपको परिवार का सुख प्राप्त होगा व आप अपने बंधुओं की सहायता करने वाले होंगे.

विग्यान योग

कुण्डली में अष्टमेश और तृतीयेश की युति हो तथा दोनों बलवान स्थिति में हों तो विज्ञान योग का निर्माण होता है.

आपकी कुण्डली में विज्ञान योग का निर्माण होता है. विज्ञान योग में जन्म लेने के कारण आप विज्ञान के अच्छे जानकार होंगे. इसके प्रति आपको विशेष लगाव होगा. आप विज्ञान संबंधी विषयों में अच्छा प्रदर्शन करने में सफल होंगे. आपको अनुसंधान कार्यों को करने में रुचि होगी. आप नई खोज एवं अविष्कार करने की कोशिश करेंगे. आपके पास धन एवं सम्मान की कमी नहीं होगी. आप समाज में विशेष स्थान प्राप्त करेंगे. आप अपने कार्यों से समाज कल्याण की चाह रखेंगे. आपके द्वारा किए गए कार्य लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत हो सकते हैं.

दीर्घायु योग

कुण्डली में यदि लग्नेश, त्रिकोण के स्वामी से युक्त हो तब दीर्घायु योग बनता है.

आपकी कुण्डली में दीर्घायु योग का निर्माण होता है. योग के नाम अनुसार ही आपको फल की प्राप्ति होगी. आप लंबी उम्र प्राप्त करेंगे. आपका जीवन अनेक स्थितियों का गवाह होगा. आप जीवन के हर उतार–चढाव के साथ स्वयं को पाएंगे. आपके द्वारा किए गए शुभ कर्म आपको शुभता प्रदान करने वाले होंगे. आप पूर्ण जीवन भोगते हैं. आप मेहनत व बुद्धिमानी द्वारा अपने कार्यों को करने का प्रयास करेंगे. पारिवारिक सुख एवं भाई बहनों के स्नेह को प्राप्त करेंगे. कभी–कभी परिस्थितियां विषम भी हो सकती हैं पर आप यदि शांत भाव से उनका सामना करते हैं तो आप अवश्य ही उनसे उभर पाएंगे.

विष योग

यदि कुण्डली के तृतीय भाव में नीच ग्रह स्थित है या कोई ग्रह शत्रु राशि में, पाप ग्रह द्वारा देखा जाता हो तो उसे धोखे से विष दिया जाता है.

यदि कुण्डली में विष योग है तो जातक को धोखे से या विश्वासघात कर जहर दिया जा सकता है. इस योग के बनने के कारण आपको सावधान रहने की आवश्यकता है. आप के शत्रु आप को धोखे से सताने का प्रयत्न भी कर सकते हैं. परंतु आप अपनी सजगता से इस परेशानी से दूर हो सकते हैं. आपको अपने गुप्त शत्रुओं से सचेत रहने की भी आवश्यकता है. भोजन संबंधी आदतों में सुधार रखें अच्छा और हेल्दी भोजन ही करें अन्यथा किसी ओर प्रकार से भी विषाक्त आापको प्रभावित कर सकती है.

यश पराक्रम कीर्ति योग

कुण्डली के केन्द्र स्थानों में यदि शुक्र, बुध या बृहस्पति हो अथवा दसवें स्थान में मंगल हो तब यह योग बनता है और व्यक्ति अपने परिवार का कुलदीपक होता है.

लग्नाधिपति योग

यदि कुण्डली में लग्नेश बली होकर केन्द्र–त्रिकोण या एकादश भाव में स्थित है तो लग्नाधिपति योग बनता है.

इस योग में आपका जन्म होने पर आप राजा के समान वैभव को भोगते हैं. आपको नौकर चाकरों का सुख मिलता है. आपकी सेवा में अनेक लोग तत्पर रहते हैं. यदि व्यक्ति का जन्म नीच कुल में भी हुआ हो तब भी वह कमल की तरह खिलता हुआ आत्म उन्नति करता है. आप अपनी इच्छाओं को पूरा करने में सफल होते हैं. आप एक अच्छे व सभ्य व्यक्ति बनते हैं. उत्तम वाहनों से युक्त, आपके पास मोती–आभूषण आदि की कमी नहीं होती. आप राजचिन्हों और राज्य स्तरीय पुरस्कारों से युक्त होकर यशस्वी होते हैं. सरकार में उच्च स्थान मिलता है.

अनन्तकीर्ति योग

कुण्डली में जब लाभेश, नवमेश या धनेश इनमें से कोई भी ग्रह यदि केन्द्र में स्थित हो, बृहस्पति भी धनेश, पंचमेश या एकादशेश होकर केन्द्र में स्थित हो, लग्नेश बली हो तब यह योग बनता है.

आपकी कुण्डली में अनन्त कीर्ति योग का निर्माण होता है. इस योग में जन्म लेने पर आप स्थाई धन–सम्पत्ति के स्वामी होते है. आप राजा के समान जीवन जीते हैं. ऐश्वर्य, वैभव, नौकर–चाकर, वाहन–स्त्री व धन सुख को भोगते हुए बहुत ज्यादा कीर्ति अर्जित करते हैं. आप परोपकारी व धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं. आप शुभ गुणों के आचरण का निर्वाह करने का विचार रखते हैं. आपको परिवार से प्रेम की प्राप्ति होती है, आपको दांपत्य जीवन का सुख प्राप्त होता है. आप जीवन में कोई एक कार्य ऐसा करते हैं जिससे आपकी यश पताका हमेशा लहराती रहती है.

अल्प सन्तति योग

यदि कुण्डली में पंचमेश, आठवें भाव में हो तब यह योग बनता है. अथवा

यदि पंचमेश, चतुर्थ भाव में उच्च का, मित्र क्षेत्री हो तो यह योग बनता है.

इस योग वाले व्यक्ति की अल्प सन्तति होती है. उसको एक या दो से अधिक संतान नहीं होती. संतान योग्य और गुणी होती है. संतान कृषि कार्य या भूमि संबंधी कार्य से धन कमाती है. आप को संतान से सुख मिलता है. संतान आपके कार्यों को आगे बढ़ने का प्रयास करने वाली होती है. इस योग में जन्म लेने वाला जातक स्वयं क्रोधी व चिड़चिड़ा हो सकता है. ऐसा जातक खांसी–कफादि रोगों से युक्त होता है. यदि कुण्डली में अच्छे योग ना हो तो सुख हीन हो सकता है.

विद्याबाधा योग

यदि कुण्डली में पंचम भाव में वृष, कन्या या मकर राशि हो अथवा पंचम भाव में धनु राशि में शनि स्थित हो। तब यह योग बनता है.

जिस बच्चे की कुण्डली में यह योग बनता है, यदि उसकी कुण्डली में कोई अन्य शुभ योग नहीं है तो विद्या अध्ययन में उसे बाधा का सामना अवश्य करना पड़ता है. जातक को शिक्षा में रुकावटें झेलनी पड़ती हैं. बीच में पढ़ाई का रुक जाना या किसी कारण से शिक्षा में पिछड़ जाना जैसे कारण देखे जा सकते हैं. परंतु यदि जातक लगन एवं परिश्रम करता है तो वह अपनी शिक्षा को पूर्ण करने में सक्षम बनता है. शिक्षा की कमी होने पर भी वह अपने कार्यों को अच्छी तरह से करने में दक्ष हो सकता है. अपनी समझ द्वारा वह अपने लिए धनार्जन के मार्ग खोल सकता है.

बुद्धिमान योग

बृहस्पति यदि कुण्डली में केन्द्र या त्रिकोण भावों में हो तब बुद्धिमान योग बनता है. अथवा पंचम भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो और दूसरे शुभ ग्रह द्वारा देखा जा रहा हो अथवा पंचमेश शुभ राशियों के साथ हो तब भी यह योग बनता है.

आपकी कुण्डली में बुद्धिमान योग का निर्माण होता है. इस योग में आपका जन्म होने के कारण आप अपने कामों को करने से पहले उस पर खूब सोच विचार करतें हैं तत्पश्चात किसी नतीजे पर पहुँचते हैं. ऐसा जातक अपनी बुद्धि चातुर्य से काम लेता है. व्यक्ति पूर्ण बुद्धिमान होता है. सदगुणी और विवेकी भी होता है. विचारों में नवीनता के साथ–साथ अर्थपूर्णता को भी समझता है. आप शांत भाव से सभी समस्याओं का सामना करते हैं. बौद्धिकता के भाव के प्रभाव से आप अपने उच्च स्तर को पाते हैं. आपको सम्मानीय पद प्राप्त होता है. आप अपनी योग्यता से सभी सुख सुविधाओं का अर्जन करते हैं.

बुद्धिचातुर्य योग

यदि पंचम भाव में बुध हो और पंचमेश बलवान हो या केन्द्र में स्थित हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तब यह योग बनता है.

आप की कुण्डली में बुद्धि चातुर्य योग का निर्माण होता है. बुध ग्रह को बुद्धि व चतुरता का कारक माना जाता है. इसलिए इस योग में जन्म होने पर आप बुद्धि व चतुरता में लाजवाब होते हैं. आप कम परिश्रम द्वार भी अपनी सफलता पा सकते हैं. आपको लोगों से काम निकालने का हुनर जानते हैं. यदि आपकी रुचि अध्ययन में होती है आप अच्छे अंकों से उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं. आप उच्च शिक्षा के लिए विदेश में भी जा सकते हैं. आप अपने नगर या ग्राम क्षेत्र के मुख्य लोगों में स्थान पाते हैं. आप

अपने लिए सुख–सुविधाओं आराम से पा सकते हैं.

सुभार्या योग

यदि कारकांश कुण्डली में सप्तम भाव में बृहस्पति व चन्द्रमा हो तब सुभार्या योग बनता है. अथवा

मीन लग्न में सप्तम भाव में बुध है तब यह योग बनता है. अथवा

सप्तमेश यदि चतुर्थ भाव या दशम भाव में स्थित हो तब यह योग बनता है. अथवा

सप्तमेश या शुक्र, गुरु से युक्त या दृष्ट हो तथा सप्तमेश बली हो तब भी सुभार्या योग बनता है. आपकी कुण्डली में इस योग का निर्माण होता है. इन योगों में जन्म लेने वाले व्यक्ति की पत्नी सुन्दर, सुलक्षणी व गुणी होती है, वह स्वधर्मपरायण व पतिव्रता होती है. हमेशा अपने पति को प्रसन्न रखने की चेष्टा करती है. यही योग यदि स्त्रियों की कुण्डलियों में बनता है तो उसका पति उसके मनोनुकूल होता है. दांपत्य जीवन का सुख प्राप्त होता है. रिश्तों में मधुरता बनी रहती है. परिवार में सुख व शांति बनी रहती है. समाज में आपका आदर सम्मान बना रहता है. आपको जीवन में आत्मिक सुख की अनुभूति प्राप्त होती है. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होता है.

सत्कलत्र योग

सप्तमेश या शुक्र यदि बृहस्पति या बुध से युत या दृष्ट हो तब यह योग बनता है.

आपकी कुण्डली में सत्कलत्र योग का निर्माण होता है. यह योग स्त्री को संस्कारी व सुशील बनता है. कन्या के गुणों में वृद्धि होती है. समाज एवं परंपरा को मानने वाले होते हैं. विचारों में नवीनता के साथ साथ शुभता का भी संगम होता है. इस योग में पैदा होने पर आपकी पत्नी बहुत ही उत्तम चरित्र वाली, बहुत ही पवित्र और सुयोग्य होती हैं. कुल की रक्षा एवं उसके सम्मान में वृद्धि करने वाली होती है. जीवन के हर दुख–सुख में वह अपने साथी का साथ निभाती है. धर्म परायणता उसमें देखी जा सकती है. परिवार में धन धान्य को बढ़ाने वाली होती है.

अन्तर्जातीय योग

कुण्डली में नवम भाव, सप्तम भाव तथा नवमेश होकर बृहस्पति का पाप ग्रहों से संबंध हो. अथवा

कर्क लग्न हो, सप्तम में चन्द्रमा शनि से दृष्ट होने से यह योग बनता है. अथवा

लग्न, चन्द्रमा, सूर्य, शुक्र का सप्तमेश से संबंध हो और शुक्र की शनि या राहु से युति हो तथा द्वितीय भाव पाप पीड़ित हो तब भी यह योग बनता है.

इस योग में यदि आपका जन्म होता है तब आप परम्पराओं को तोड़कर विवाह करते हैं. आप प्रेम

विवाह के लिए आतुर देखे जा सकते हैं. जीवन साथी के रुप में आप अपनी पसंद के कारण भी किसी अन्य जाती के व्यक्ति से विवाह कर सकते हैं. आप सभी जातीय व्यवस्था एवं मर्यादाओं को लांघकर अन्तर्जातीय विवाह कर सकते हैं. कई बार व्यक्ति इसके लिए अपना धर्म परिवर्तन भी कर लेता है. इस प्रकार के विवाह के कारण उसे समाज और परिवार का विरोध भी सहना पड़ सकता है.

विदेशविवाह योग

कुण्डली में सप्तम भाव का कारक शुक्र या सप्तम भाव का अधिपति क्रूर ग्रहों के साथ त्रिकोण में स्थित हो तब विदेश में विवाह के योग बनते हैं.

आपकी कुण्डली में विदेश विवाह योग का निर्माण होता है. इस योग में जन्में व्यक्ति का विवाह विदेश में होता है. इस कारण आपका विवाह भी विदेश में हो सकता है. आपका विदेशी कन्या से विवाह का योग भी भी बन सकता है. आप अपने स्थान से दूर जा कर बस सकते हैं. आपके लिए किसी दूर जगह से रिश्ता आ सकता है. आप कहीं दूर जाकर विवाह कर सकते हैं. आपको विदेश में नाम व यश की प्राप्ति हो सकती है या आप बाहर जाकर अपना धनार्जन कर सकते हैं.

रश्मि योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह शीर्षोदय राशि में हों और चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट या युत होकर कर्क राशि में हो तो रश्मि योग बनता है. अथवा

लग्नेश नवम भाव में हो या दशम भाव में हो तो रश्मि योग बनता है. अथवा

मंगल उच्च्च का हो, बली हो तथा उसको सूर्य, चन्द्रमा और गुरु देखते हों तो प्रबल रश्मि योग बनता है .

आपकी कुण्डली में रश्मि योग की रचना होती है. आपको यह योग सुख व समृद्धि प्रदान करता है. लोगों से यश व मान सम्मान की प्राप्ति होती है. इस योग में आप सुख–सुविधा सम्पन्न व्यक्ति होते हैं. आपको वाहन सुख, पारिवारिक सुख और आर्थिक सुख पूर्ण रुप से प्राप्त होते हैं. आपको जीवन साथी का साथ व प्रेम प्राप्त होता है. आप संबंधों को निभाने वाले होते हैं. जीवन में प्रगत्ति को पाते हैं. आप बलिष्ठ व साहसी होते हैं. आप आकर्षक व्यक्तित्व के व्यक्ति होते हैं. आप धर्म कर्म के कार्यों में अग्रीण रहते हैं. दान व परोपकारिता आपको आगे ले जाती है.

शुभकर्तारी योग

कुण्डली में यदि लग्न से दूसरे भाव तथा बारहवें भाव में शुभ ग्रह स्थित हैं तो यह शुभ कर्तरी योग बनता है. यह योग कुण्डली में किसी भी भाव में बन सकता है. किसी भी भाव से दूसरे या बारहवें भाव में शुभ ग्रह हैं तो शुभ कर्तरी योग होता है.

पापकर्तारि योग

कुण्डली में किसी भी भाव से दूसरे भाव और बारहवें भाव में यदि दोनों और पाप ग्रह स्थित हैं तो यह पाप कर्तरी योग कहलाता है.

पाप कर्तरी योग कुण्डली के शुभ योगों में कमी लाता है. इस योग के कारण व्यक्ति को जीवन में कई रुकावटों का सामना करना पड़ सकता है. जो भाव पाप कर्तरी में है, उस भाव के फलों में कमी बनी रहती है. संघर्ष व परिश्रम करने के बावजूद भी व्यक्ति को अपनी मेहनत का पूरा फल नहीं मिल पाता है. यदि कुण्डली का लग्न पाप कर्तरी में है तो वह पाप कर्म अधिक करता है. इस कारण शारिरीक थकावट या स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां सता सकती हैं. व्यक्ति अपने आपको एक बन्धन में महसूस करता है. ऐसा जातक कुचक्र रचने में तेज होता है. कई बार व्यक्ति प्रवृत्ति से भिक्षुक व चित्त मलिन रहता है.